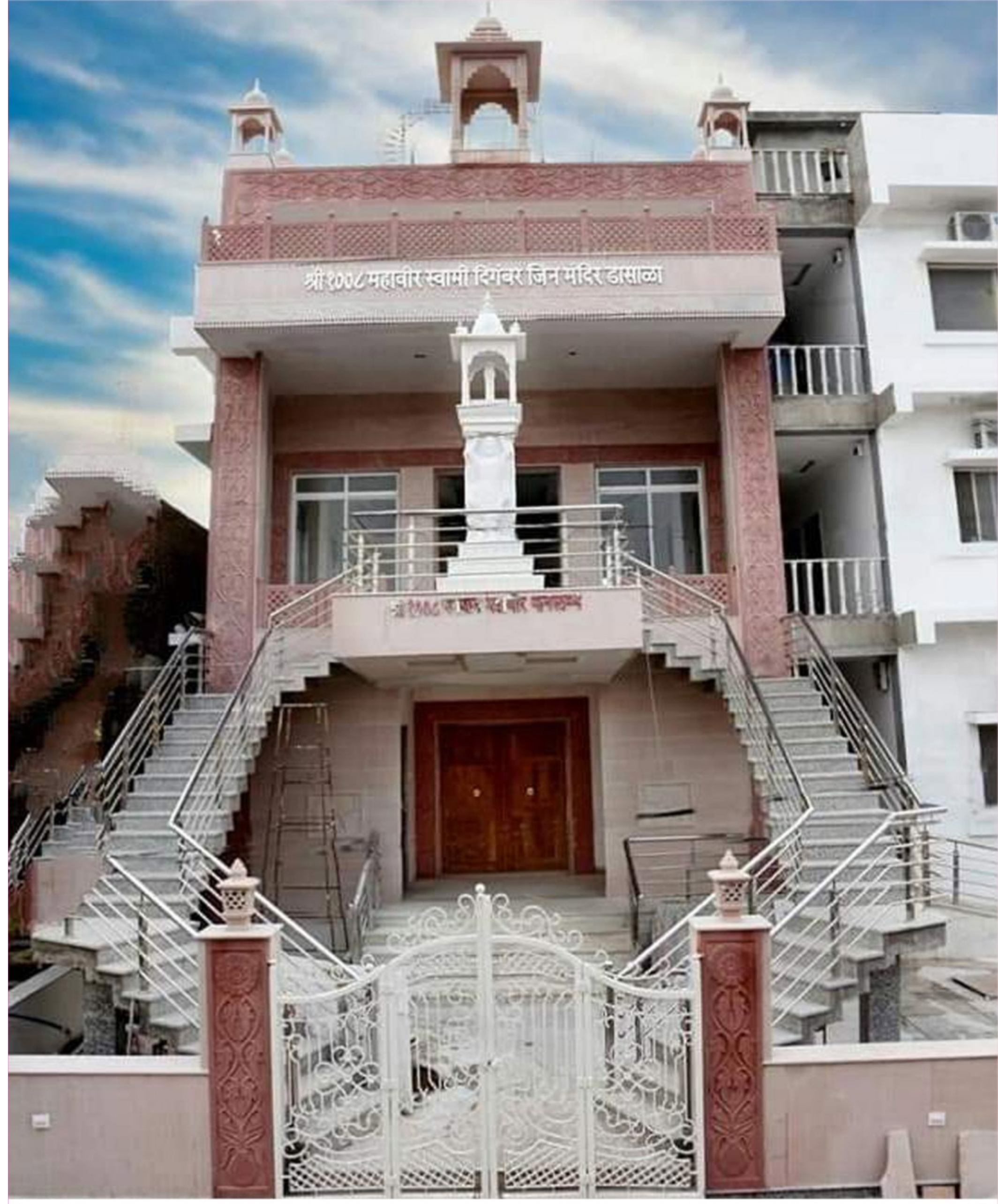

श्री 1008 महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर, डासाला, जिला-परभणी (महा.)

प्रकाशन तिथि : 26 फरवरी 2019, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 37, अंक 8, कुल पृष्ठ 28

वीतराग-विज्ञान

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

ISSN 2454 - 5163

वीतराग–विज्ञान (427)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर – 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10200

सिद्धि का पंथ

आत्मा का स्वभाव निर्मल है और उस स्वभाव के आश्रय से निर्मल भाव को अपने कर्मरूप से प्राप्त करे – ऐसी आत्मा की त्रिकाल शक्ति है। शरीर–मन–वाणी आदि पर को अपने कर्मरूप से प्राप्त करे – ऐसी शक्ति आत्मा में तीनकाल में नहीं है और पुण्य–पापरूप विकार भावों को अपने कर्मरूप से प्राप्त करे – ऐसा भी आत्मा का त्रिकाल स्वभाव नहीं है; निर्मल स्वभावभाव को प्राप्त करे – ऐसा ही आत्मा का स्वभाव है। अज्ञानी एक समय के विकार को अपने कर्मरूप से प्राप्त करता है, वह उसकी पर्याय की योग्यता है, किन्तु त्रिकाली द्रव्य स्वभाव में तो विकार को प्राप्त करने की योग्यता नहीं है; यदि द्रव्य स्वभाव में ही विकार को प्राप्त करने की योग्यता हो तो वह कभी दूर नहीं हो सकती। आत्मा का शुद्ध स्वभाव तो निर्मल भाव को ही कर्मरूप से प्राप्त करना है, इसलिये उस स्वभाव के आश्रय से निर्मल भाव प्राप्त करके अनंत जीव विकार रहित सिद्ध परमात्मा हो गये हैं और उसी प्रकार सदैव अन्य जीव भी सिद्ध होते ही रहेंगे – यह सिद्धि का पंथ है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 495

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार॥

वर्ष : 37 (वीर नि. संवत् – 2545) 427 अंक : 8

संत निरंतर चिंतत...

संत निरंतर चिंतत ऐसै, आतमरूप अबाधित ज्ञानी॥टेक॥
वरणादिक विकार पुदगल के, इनमें नहिं चैतन्य निशानी।
यद्यपि एक क्षेत्र अवगाही, तदपि लक्षण भिन्न पिछानी॥
संत निरंतर चिंतत ...॥1॥
रागादिक तो देहाश्रित हैं, इनतें होत न मेरी हानी।
दहन दहत ज्यों गगन न तद्‌गत, गगन दहनता की विधि हानी॥
संत निरंतर चिंतत ...॥2॥
मैं सर्वांग पूर्ण ज्ञायक रस, लवणखिल्लवत लीला ठानी।
मिलो निराकुल स्वाद न यावत, तावत पर–परनति हित मानी॥
संत निरंतर चिंतत ...॥3॥
'भागचन्द्र' निरद्वन्द निरामय, मूरति निश्चय सिद्ध समानी।
नित अकलंक अवंक शंक बिन, निर्मल पंक बिना जिमि पानी॥
संत निरंतर चिंतत ...॥4॥

– कविवर पण्डित भागचंदजी

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 860 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 135 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 30 जून 2019 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेजदें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **सूरत (गुज.) में 19 मई से 5 जून, 2019 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा। **– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** (प्राचार्य)

फॉर्म मंगाने का पता : – पण्डित जिनकुमार शास्त्री (अधीक्षक) (8903201674) (8072446379) श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458; Email-ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

सर्वज्ञता का स्वरूप समझे बिना देशनालब्धि संभव नहीं है और सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए देशनालब्धि अनिवार्य है।

अरहंत भगवान को द्रव्य-गुण-पर्याय से जानने की शर्त में यह संकेत भी है कि बाह्य अतिशयों से उनकी पहिचान करनेवालों को आत्मा का ज्ञान नहीं होता।

इसीप्रकार पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, तीर्थयात्रा आदि क्रियाकाण्डसे भी न तो आत्मा का जानना होता है और न मोह का नाश ही होता है।

प्रश्न – मोह के नाश के लिए आत्मा के समान ही परमात्मा को जानना है कि दोनों के जानने में कुछ अन्तर है ?

उत्तर – अन्तर है; क्योंकि परमात्मा को तो मात्र जानना ही है, जानते ही नहीं रहना है, उन्हीं में लीन नहीं हो जाना है; किन्तु आत्मा को जानकर उसे जानते ही रहना है, उसी में जम जाना है, रम जाना है।

परमात्मा का जानना तो एक सीढ़ी मात्र है, गन्तव्य नहीं; पर आत्मा को मात्र जानना ही नहीं है, निजरूप जानना है, उसी में अपनापन स्थापित करना है, उसी में समा जाना है।

परमात्मा के ध्यान से तो पुण्य का बंध होता है; पर आत्मा के **ध्यान से कर्म कटते हैं; मिथ्यात्व का नाश होता है।**

मूलत: तो आत्मा को ही जानना है और परमात्मा को आत्मा को जानने के लिए जानना है।

आत्मा निजरूप है और वह निजरूप से ही जाना जाता है तथा **परमात्मा पररूप है और पररूप से ही जाना जाता है।**

इसप्रकार इन दोनों के जानने में बहुत बड़ा अंतर है।

प्रश्न – कोरे जानने से काम हो जायेगा, करना कुछ भी नहीं है। यदि कुछ भी नहीं करना है तो काम होगा कैसे ?

उत्तर – अरे भाई ! जानना भी तो एक काम है, और आत्मा का तो एकमात्र काम जानना ही है; क्योंकि यह आत्मा पर में तो कुछ कर ही नहीं सकता; अपने स्वपरप्रकाशक स्वभाव के कारण यह आत्मा पर को तो मात्र जान ही सकता है।

जानना एक काम नहीं, अपितु आत्मा का काम तो एकमात्र जानना ही है।

लोक में भी करने की अपेक्षा जानने को बड़ा काम माना जाता है। मजदूर काम करता है तो उसे मजदूरी में प्रतिदिन २०० रुपये मिलते हैं; पर अनेक मजदूरों को देखने-जाननेवाले ओवरसियर को प्रतिदिन ५०० रुपये मिलते हैं और मजदूरों को देखनेवालों को देखने-जाननेवाले ठेकेदार या मालिक की आय अनलिमिटेड होती है, अनन्त होती है।

इसीप्रकार जगत को देखने-जाननेवालों की अपेक्षा देखने-जाननेवाले आत्मा को देखने-जाननेवाला आत्मा अधिक महान है; क्योंकि ज्ञायक स्वभावी आत्मा को जाननेवाले ही अनन्त सुख की प्राप्ति करते हैं।

एक बात और भी ध्यान देने योग्य है कि यहाँ आत्मा और परमात्मा – दोनों को जानने की बात कहकर यह भी कह दिया है कि आत्मा स्व और पर दोनों को जान लेता है; क्योंकि आत्मा स्व है और परमात्मा पर हैं।

इसतरह यह भी प्रतिफलित होता है कि मिथ्यात्व के नाश के लिए **स्व (आत्मा) और पर (परमात्मा) दोनों को जानना अनिवार्य है।**

पर के जानने को निरर्थक बतानेवाले लोगों को उक्त तथ्य पर भी ध्यान देना चाहिए।

मिथ्यात्व के नाश का आशय मिथ्यात्व नामक कर्म के नाश से नहीं;

क्योंकि वह तो परद्रव्य है और परद्रव्य की क्रिया का कर्ता-धर्ता भगवान आत्मा है ही नहीं।

यहाँ तो परपदार्थों और रागादि विकारों में एकत्वबुद्धि, ममत्वबुद्धि, कर्तृत्वबुद्धि और भोक्तृत्वबुद्धिरूप मिथ्यात्व भाव के नाश की बात है। हाँ, यह बात अवश्य है कि इनके अभाव होने पर मिथ्यात्व नामक कर्म के भी यथायोग्य उपशमादि हो जाते हैं।

अरहंत परमात्मा हमारे किस काम के हैं, हमें उनका क्या करना है? इसके उत्तर में यदि यह कहें कि उनके दर्शन करना है, पूजा करनी है, प्रतिष्ठा करनी है, मंदिर बनवाना है।

अरे भाई ! यह कुछ भी नहीं करना है, उन्हें मात्र जानना है, जानने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं करना है; क्योंकि यहाँ तो यही लिखा है कि **जो अरहंत भगवान को द्रव्यरूप से, गुणरूप से और पर्यायरूप से जानते हैं; वे अपने आत्मा को जानते हैं और उनका मोह नाश को प्राप्त होता है।**

मोह के नाश के लिए, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की प्राप्ति के लिए परमात्मा (अरहंत) को मात्र जानना है; जानने के अलावा कुछ नहीं करना है; क्योंकि वे तो हमारे मात्र ज्ञेय हैं और कुछ नहीं।

ध्यान रहे, यहाँ यह नहीं लिखा है कि उन्हें जानना भी नहीं है; क्योंकि वे पर हैं।

यहाँ तो उन्हें जानने की बात डंके की चोट पर लिखी है और उन्हें जानने का फल आत्मा को जानना बताया है। आत्मा के जानने पर मोह का नाश होता है; इसप्रकार प्रकारान्तर से अरहंत के जानने को मोह के नाश का उपाय बताया गया है।

आत्मा का कार्य मात्र जानना है, स्व-पर को जानना है; इसलिए मात्र जानो, जानो, जानो और जानो; पर को जानो, स्व को जानो, स्व-पर को जानो; पर से भिन्न स्व को जानो, जानो और जानते रहो।

अपने को अपना मानकर जानते रहो, लगातार जानते रहो और कुछ भी नहीं करना है।

इसी से सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र सभी हो जावेंगे और न केवल दर्शनमोह अपितु चारित्रमोह का भी नाश हो जायेगा। तुम स्वयं पर्याय में भी भगवान बन जावोगे।

स्वभाव से तो भगवान हो ही; पर्याय में बनना है सो इसीप्रकार स्व को जानते रहने से पर्याय में भी भगवान बन जावोगे, सर्वज्ञ-वीतरागी हो जावोगे।

इसप्रकार यह सुनिश्चित हुआ कि मोह के नाश का उपाय एकमात्र निजभगवान आत्मा को जानना है और अधिक आगे जायें तो इसमें द्रव्य-गुण-पर्याय से परमात्मा के स्वरूप को जानना भी शामिल कर सकते हैं। इसके आगे बढ़ना तो उपचार में उपचार होगा।

प्रश्न – आत्मा और परमात्मा (अरहंत) की पर्याय में कोई अन्तर नहीं है – यह बात गले नहीं उतरती; क्योंकि कहाँ हम रागी-द्वेषी अल्पज्ञ और कहाँ वे वीतरागी सर्वज्ञ ?

उत्तर – हमारी और उनकी पर्याय में जो अन्तर है, वह तो आपको स्पष्ट दिखाई दे ही रहा है और उक्त अन्तर को समाप्त करने के लिए ही अपना यह सब पुरुषार्थ है।

अब रही बात अन्तर नहीं होने की सो यहाँ जो द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप बताया है; उसमें यह बात स्पष्ट ही है।

अन्वय सो द्रव्य, अन्वय का विशेषण गुण और अन्वय का व्यतिरेक पर्याय है – यही कहा है यहाँ।

है, है और है; निरन्तर होते-रहने का नाम **अन्वय** है। सत्तास्वरूप वस्तु निरन्तर ही विद्यमान रहती है; भगवान आत्मा भी सत्तास्वरूप वस्तु है और वह भी अन्वयरूप से निरन्तर रहता है; इसीकारण **द्रव्य** है।

अन्वयरूप से विद्यमान वस्तु की अन्वयरूप से रहनेवाली विशेषताएँ ही गुण हैं। **भगवान आत्मा के ज्ञान, दर्शन आदि गुण आत्मा में निरन्तर ही रहते हैं।**

(क्रमशः)

ढाईद्वीप : पूर्णता की ओर बढते कदम

आज दिनांक 5 फरवरी 2019 को तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में ढाईद्वीप के निर्माण संबंधी आगामी रूपरेखा की तैयारी के लिये ढाईद्वीप जिनायतन ट्रस्ट के ट्रस्टियों एवं समाज के प्रमुख लोगों की एक अनौपचारिक मीटिंग की गई। इसमें ढाईद्वीप ट्रस्ट के ट्रस्टी मण्डल में से सर्वश्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर (कार्याध्यक्ष), श्रीमती सोनल जैन इन्दौर (महामंत्री), शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर (मंत्री), प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ (ट्रस्टी), कु. सृष्टि जैन इन्दौर (ट्रस्टी), कमलजी बड़जात्या मुम्बई (ट्रस्टी), कैलाशचंदजी छाबड़ा मुम्बई (ट्रस्टी) के अलावा अशोकभाई बादर जामनगर, विपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पीयूषजी शास्त्री जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस मीटिंग में ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्रीमती शोभा रसिकलाल धारीवाल पुणे (ट्रस्टी), श्री विपिनभाई बादर जामनगर (ट्रस्टी), प्रेमचंदजी बजाज कोटा (ट्रस्टी), सौ.जाह्नवी धारीवाल पुणे (ट्रस्टी), कोषाध्यक्ष महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, आनंदजी पाटनी इन्दौर (ट्रस्टी) के अतिरिक्त मुम्बई से अनंतभाई ए. शेठ (संस्थापक), श्री कान्तिभाई मोटानी, नितिनभाई शाह, अक्षयभाई दोशी, जयपुर से राहुलजी गंगवाल, दिल्ली से आदीशजी जैन, कोलकाता से सुरेशजी पाटनी आदि महानुभाव अपनी व्यस्ततावश नहीं आ सके, लेकिन उनकी पूर्ण सहमति रही।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अस्वस्थता के कारण मीटिंग की अध्यक्षता श्रीमान् प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने की। मीटिंग में ट्रस्ट के मंत्री श्रीमान् शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने ढाईद्वीप की अभी तक की प्रगति की जानकारी देते हुए बताया कि श्रीमान् मुकेशजी जैन ढाईद्वीप के स्वप्नदृष्टा थे, वे इस प्रोजेक्ट को पूरी तरह देख रहे थे, परन्तु उनके असामयिक निधन के बाद अब ट्रस्ट मण्डल को मिलकर इसे पूरा करने की जिम्मेदारी उठानी है। इसके लिये श्री अमित खण्डेलवाल 'आर्च पॉइन्ट' जयपुर के डायरेक्टर को प्रोजेक्ट का आर्किटेक्ट नियुक्त कर – इस प्रोजेक्ट में अभी तक क्या हुआ है/क्या बाकी है और उसे किस प्रकार पूरा किया जायेगा, इसकी रूपरेखा तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई थी। इसके लिये उन्होंने इस काम से संबंधित सभी क्षेत्रों के विशेषज्ञों की टीम तैयार की है; सभी ने ढाईद्वीप का निरीक्षण कर अपनी विस्तृत रिपोर्ट तैयार की है, जिसके आधार पर वे जयपुर में डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कर लाये हैं।

आर्किटेक्ट श्री अमित खण्डेलवाल ने इस प्रोजेक्ट की विस्तृत जानकारी देते हुए सभी को बताया कि श्री मुकेशजी ने ढाईद्वीप की जिसप्रकार विश्वस्तरीय बनाने की परिकल्पना की थी, उसको साकाररूप देने के लिये लगभग 20-25 करोड़ रुपये की लागत और 2.5 से 3 वर्ष का

समय लगेगा।

इसके साथ ही यह ढाईद्वीप कैसे पूर्ण होगा, पूर्ण होने पर किसप्रकार दिखाई देगा, उसे किस प्रकार पूरा कर सकेंगे आदि अनेक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला और सभी उपस्थित महानुभावों के प्रश्नों का संतोषपूर्ण समाधान दिया।

सभी ने विचार करते हुए निर्णय किया कि इस विश्वस्तरीय कार्य को हम चरणबद्ध तरीके से पूर्ण करें और प्रथम चरण में ढाईद्वीप की संरचना का काम हाथ में लेकर उसे पूर्ण किया जावे। इस कार्य में लगभग 15 करोड़ की लागत आयेगी।

प्रथम चरण में ढाईद्वीप जिनालय का निर्माण पूर्ण होकर सभी 1143 वीतरागी जिनप्रतिमाएं विराजमान हो जाये तथा सम्पूर्ण जैन समाज वीतरागी जिनबिम्बों के दर्शन से शीघ्र ही लाभान्वित हो सके – ऐसा संकल्प श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने लिया और यह विश्वास व्यक्त किया कि यह जिनालय प्रस्तावित समयानुसार ही पूर्ण हो जायेगा।

इस कार्य को पूर्ण करने हेतु लागत 15 करोड़ रुपये की धनराशि मुमुक्षु समाज से एकत्रित करने का दायित्व स्वेच्छा से स्वयं अपने ऊपर लिया। मीटिंग में सम्मिलित सभी महानुभावों ने इसकी भूरि–भूरि प्रशंसा करके अनुमोदना व्यक्त की तथा ढाईद्वीप जिनालय को पूर्ण करने हेतु वित्त व्यवस्था की जवाबदारी श्री विपिनजी जैन मुम्बई को सौंपी।

इसके पश्चात् निर्माण कार्य हेतु एक निर्माण समिति बनाने का विचार हुआ जो ढाईद्वीप के निर्माण संबंधित समस्त कार्यों की देखरेख करे। शुद्धात्मप्रकाशजी को संबंधित लोगों से बात कर इसकी कमेटी गठन करने हेतु नाम प्रस्तावित करने की जिम्मेदारी दी गयी।

अंत में सभी ने ढाईद्वीप के प्रोजेक्ट को शीघ्र पूरा कर जल्दी से जल्दी पंचकल्याणकपूर्वक जिनबिम्ब विराजमान करने का संकल्प दोहराया।

अंत में ढाईद्वीप में विराजमान सभी तीर्थंकरों के जयघोष के साथ मीटिंग सम्पन्न हुयी।

– अशोक जैन शास्त्री, ढाईद्वीप–इन्दौर

शोक समाचार

मुम्बई निवासी श्री सुमेरचंद रामराव दोंडल का दिनांक 28 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप डॉ. अरुणजी दोंडल के भाई थे। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान हेतु 1100/– रुपये प्राप्त हुए।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

छहढाला प्रवचन

अनित्य भावना

जोबन–गृह–गो–धन–नारी, हय–गय–जन आज्ञाकारी।
इन्द्रिय–भोग छिन थाई, सुरधनु चपला चपलाई।।३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

यहाँ कोई पूछता है कि ये संयोग नष्ट हो जायेंगे – यह बात तो ठीक है; परन्तु जबतक वे हमारे पास हैं, तबतक तो उनसे सुख लेने दो ?

अरे भाई ! ये संयोग तुम्हारे पास रहें, तब भी उनमें तुम्हारा सुख नहीं है। तुम तुममें और संयोग संयोग में हैं, संयोग तुममें नहीं हैं और तुम संयोग में नहीं हो; तो इनमें से तुम्हारा सुख कैसे आ सकता है ? तुम्हारा सुख तुममें होगा कि संयोग में ? क्या सुख तुम्हारा स्वयं का स्वभाव नहीं है ? क्या तुम्हारा सुख संयोगों में से आता है ? हे जीव! तू भ्रम मत कर, तेरा सुख तो अन्तर में है, वह बाहर खोजने से नहीं मिलेगा।

इसप्रकार कुछ दृष्टान्त दिये हैं; परन्तु ऐसे बहुत प्रसंग नितप्रति बनते दिखाई देते हैं। सभी संयोग क्षणभंगुर हैं। जीव के साथ कोई संयोग बना नहीं रहता। स्वभाव तो कायम रहता है; परन्तु संयोग कायम नहीं रहते। धर्मी तो ऐसा जानता है कि–

एक मेरा आतमा थिर ज्ञानदर्शन युक्त है।
शेष सब संयोग लक्षण भाव मुझसे भिन्न हैं।।

पुण्य के फलरूप इन्द्रपद की विभूति का संयोग भी क्षणभंगुर है और आत्मा से भिन्न है। भले असंख्यात वर्ष तक वह संयोग साथ रहे; परन्तु उसमें मेरा रंचमात्र भी सुख नहीं है – ऐसा सम्यग्दृष्टि इन्द्र जानता है। संयोग रहित चैतन्य का

अतीन्द्रिय सुख उसे प्राप्त है; अत: वह पुण्य के फल में भी ममत्व नहीं करता। अरे ! राग का फल कभी शाश्वत होता है क्या ? क्या इसमें आत्मा का सुख है? शाश्वत चैतन्य स्वभाव में से होनेवाली सुखदशा शाश्वत रहती है। संयोग अथवा राग शाश्वत नहीं रहते। अरे ! जहाँ तीर्थंकरों का शरीर अथवा समवशरण भी शाश्वत नहीं है, तब अन्य की क्या बात करें ? अत: हे जीव ! संयोगों की अध्रुवता, अनित्यता विचार करके संयोगों से भिन्न नित्य-उपयोगस्वरूप ध्रुव आत्मा की दृष्टि कर, बार-बार उसके चिन्तन में उपयोग लगा।

सम्यग्दृष्टि जीव नियम से ज्ञान-वैराग्यसम्पन्न होता ही है। वह बारह भावनाओं द्वारा पदार्थों के स्वरूप का चिन्तन करके वैराग्य की पुष्टि करता है और परिणाम में एकाग्रता बढ़ाता है। मैं ज्ञानानन्दस्वरूप शुद्धात्मा हूँ, पुण्य-पाप के भाव क्षणिक व दु:खरूप हैं, चैतन्यजाति से भिन्न हैं। जब पुण्य-पाप ही मेरे नहीं हैं तो प्रगटरूप से मुझसे भिन्न ऐसे शरीरादि अचेतन संयोगों के साथ मेरा कैसा नाता ? ऐसी भिन्नता का जिसको भान होता है, वह सच्ची वैराग्यभावना भा सकता है। क्रोधादि आस्रव भावों को अध्रुव, दु:खरूप, जीव से भिन्न विचारने का फल यह हुआ कि आत्मा उनसे भिन्न ध्रुव ज्ञानस्वरूप में एकाग्र होकर सुख का अनुभव करने लगा। यही अध्रुवभावना का फल है। इसीप्रकार सभी भावनाओं का यथायोग्य फल जानना चाहिए। आत्मा का संवर तथा धर्मरूप से परिणमित हो जाना ही संवरभावना अथवा धर्मभावना का फल है। जवानी को क्षणिक कहा है, उसीप्रकार शरीर की बाल्यावस्था और वृद्धावस्था भी क्षणिक हैं। शरीर की उन सभी दशाओं से आत्मा भिन्न है। सिद्ध भगवान जिसप्रकार अशरीरी, चैतन्यमूर्ति है; उसीप्रकार मेरा आत्मा भी अशरीरी चैतन्यमूर्ति है। हे भाई ! इसप्रकार तू अपने आत्मा की सम्हाल कर। मोह से शरीर की सम्हाल में तो अनंतकाल गंवा दिए; फिर भी सारी मिथ्या-मेहनत निष्फल हो गई। अनन्तकाल में यह जीव एक भी शरीर को अपना बना के नहीं रख सका। यदि अपने चैतन्यतत्त्व को संभालने का उद्यम करे तो उसके फल में सादि-अनन्त काल को मोक्षसुख प्रगट होगा, उसके लिए ये भावनाएँ हैं। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन –

आचार में स्थिरता वाला प्रतिक्रमणमय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ८६ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

उम्मग्गं परिचत्ता जिणमग्गे जो दु कुणदि थिरभावं।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ॥८६॥

(हरिगीत)

छोड़कर उन्मार्ग जो जिनमार्ग में थिरता धरे।
प्रतिक्रमणमय है इसलिए प्रतिक्रमण कहते हैं उसे ॥८६॥

जो जीव उन्मार्ग को छोड़कर जिनमार्ग में स्थिरभाव करता है, वह जीव ही प्रतिक्रमण कहा जाता है; क्योंकि वह प्रतिक्रमणमय है।

(गतांक से आगे....)

धर्मी जीव को आत्मा के सच्चे भानसहित विपरीत मान्यता का त्याग होना ही मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण है और स्वभाव में लीनता करने पर अव्रत का त्याग होना अव्रत का प्रतिक्रमण है। प्रथम के बिना द्वितीय नहीं हो सकता। इसप्रकार सम्यग्दृष्टि जीव व्यवहार से अट्ठाईस मूलगुणात्मक मार्ग में और निश्चय से दर्शन-ज्ञान-चारित्रस्वरूप अपने आत्मा में स्थिरभाव करते हैं, अतः वे मुनि निश्चय-प्रतिक्रमणस्वरूप कहे जाते हैं (छट्ठे गुणस्थान में जितनी वीतरागता है, उतना निश्चयप्रतिक्रमण है। यहाँ तो विशेष लीनता को प्रतिक्रमण कहा गया है) क्योंकि उनको परम आत्मतत्त्व के साथ सम्बन्धवाला निश्चय प्रतिक्रमण है, उसे निमित्त के साथ अथवा विकल्प के साथ सम्बन्धवाला नहीं कहा। निमित्त, व्यवहार, पर्याय आदि को गौण करके त्रिकाल शुद्धस्वभाव में लीनता की – वह सच्चा प्रतिक्रमण है। इसीलिए वे तपोधन अर्थात् तपरूपी लक्ष्मी के स्वामी मुनि सदा

शुद्ध हैं। प्रथम वस्तुस्वरूप की पहचान करना चाहिए; उसके उपदेशक आप्तपुरुष की पहिचान बिना सम्यग्दर्शन नहीं होता, सम्यग्दर्शन के बिना चारित्र नहीं होता, चारित्र के बिना केवलज्ञान नहीं होता और केवलज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती। अतः जैसा है, वैसा यथार्थ ज्ञान करना चाहिए।

पुराणपुरुषों के द्वारा सेवन किए गए चारित्र को अंगीकार करके चैतन्यस्वरूप आत्मा में सर्वतः स्थिति करो।

इसीप्रकार श्री प्रवचनसार की अमृतचन्द्राचार्यदेवकृत तत्त्वदीपिका नामक टीका में १५वें श्लोक द्वारा कहा है कि :-

(शार्दूलविक्रीडितम्)

इत्येवं चरणं पुराणपुरुषैर्जुष्टं विशिष्टादरै-
रुत्सर्गादपवादतश्च विचरद्बह्वीः पृथग्भूमिकाः।
आक्रम्य क्रमतो निवृत्तिमतुलां कृत्वा यतिः सर्वत-
श्चित्सामान्यविशेषभासिनि निजद्रव्ये करोतु स्थितिम्।।४१।।

(मनहरण कवित्त)

उतसर्ग और अपवाद के विभेद द्वारा।
भिन्न-भिन्न भूमिका में व्याप्त जो चरित्र है।।
पुराणपुरुषों के द्वारा सादर है सेवित जो।
उसे प्राप्त कर संत हुए जो पवित्र हैं।।
चित्सामान्य और चैतन्यविशेष रूप।
जिसका प्रकाश ऐसे निज आत्मद्रव्य में।।
क्रमशः पर से पूर्णतः निवृत्ति करके।
सभी ओर से सदा वास करो निज में।।४१।।

इसप्रकार विशिष्ट आदरवाले[१] पुराण पुरुषों द्वारा सेवन किया गया, उत्सर्ग और अपवाद द्वारा अनेक पृथक्-पृथक् भूमिकाओं में व्याप्त जो चरण (-चारित्र) उसे यति प्राप्त करके, क्रमशः अतुल निवृत्ति करके, चैतन्यसामान्य और चैतन्यविशेषरूप जिसका प्रकाश है ऐसे निजद्रव्य में सर्वतः स्थिति करो।

१. आदर = सावधानी; प्रयत्न; बहुमान।

(क्रमशः)

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

चिति शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

यह तो सत्यनारायण की कथा है। **सत् आत्मा के नारायण अर्थात् परमात्मा बनने की कथा है।** अहाहा! नर से नारायण बनने की/परमात्मा बनने की भागवत कथा है। यह वीतराग का मार्ग है बापू! यह कोई साधारण चीज नहीं है; अन्दर अनुभव में महान पुरुषार्थ से प्राप्त हो – ऐसी चीज है; परन्तु इस जीव ने एक समय की पर्याय के पर्दे के पीछे विराजमान अपने त्रिकाली स्वरूप पूर्ण परमात्मतत्त्व को भूलकर अनादि से पर्याय का ही लक्ष्य किया है; अपने स्वभाव का लक्ष्य नहीं किया। अतः स्वभावदृष्टि के अभाव में इसके भव का अन्त नहीं आया। पंचमहाव्रतादि क्रियाकाण्ड में यदि मंदराग हो तो स्वर्ग मिल जाता है; परन्तु भव का अन्त नहीं आता। अरे भाई! ये सब तो तूने अनन्तभव में अनन्तबार किया। **अन्दर भगवान आत्मा अनन्तशक्ति का सागर चैतन्य निधान प्रभु है। जब उसकी अन्तर्दृष्टि द्वारा आनन्द का अनुभव करे तो निराकुल शान्ति का स्वाद आवे। अहाहा! अन्तःपुरुषार्थ जाग्रत करके स्वरूप स्फुरायमान वीर्य द्वारा अनन्तगुणों की निर्मलपर्याय प्रगट होती है।**

आत्मा में एक वीर्यगुण है, जो चेतनागुण के परिणमन के साथ अनन्त गुणों की निर्मलपर्याय की रचना करता है।

लोग कहते हैं 'जीओ और जीने दो' – यह भगवान महावीर का

सन्देश है; परन्तु भगवान महावीर का सन्देश तो ऐसा नहीं है; क्योंकि दूसरे जीवों का जीवन इसके हाथ में कहाँ है –यह दूसरे को जिलाये और दूसरा इसके जिलाने से जीवे – ये भगवान महावीर की वाणी ही नहीं है। कोई किसी को जिलाये या मारे यह वस्तुस्थिति ही नहीं है। **जीव में त्रिकाल जीवत्वशक्ति है तथा त्रिकाल चैतन्यभावप्राण द्वारा अनादि अनन्त जीव का जीवन है। ऐसी निज जीवनशक्ति की पहिचानपूर्वक अन्तर्मुख होकर निराकुल जीवन जीना ही यथार्थ जीवन है। ऐसा जीवन स्वयं एवं अन्य जीव जियें – यह महावीर का सन्देश है, उपदेश है।**

ये जीवत्वादि शक्तियाँ तो त्रिकाल जीते–जागते जीव की घोषणा करती हैं। भाई! **ये शक्तियाँ तो अन्दर भगवान के दरबार का अनुपम–अनमोल खजाना है। तू अन्तर्मुखदृष्टि द्वारा उस खजाने को खोल दे। आहाहा....! चैतन्यनिधान ध्रुवधाम प्रभु आत्मा है। ऐसे अपने ध्रुवधाम को ध्येय बनाकर, धीरज से ध्यान की धूनी रमाने वाले धर्मी जीव ही वास्तविक जीवन जीते हैं, वे धन्य हैं।** सभी ऐसा जीवन जीवें – ऐसा भगवान महावीर का सन्देश हैं।

(क्रमशः)

वीतराग–विज्ञान के स्वामित्व का विवरण (फार्म 4 नियम नं. 8)

समाचार पत्र का नाम	:	वीतराग–विज्ञान (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
प्रकाशक एवं मुद्रक	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) द्वारा पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक का नाम	:	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर –15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं। – प्रकाशक :**ब्र. यशपाल जैन**

दिनांक : 26–2–2019 ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : पर्याय में प्रभुता कैसे प्रगट हो ?

उत्तर : तू रागादि से निर्लेपस्वरूप प्रभु है। कषायोत्पत्ति हो, उसे मात्र जानना ही तेरी प्रभुता है। कषाय में एकत्वबुद्धि करके निजत्व स्थापित करना तेरी प्रभुता नहीं है। भाई ! तू निर्दोष वस्तु है – तुझे कषाय का लेप लगा ही नहीं है। आत्मा तो सदा ही कषायों से निर्लिप्त है। जैसे स्फटिकमणि में पर का प्रतिबिम्ब पड़ता है, वैसे ही कषायभाव – विभावभाव ज्ञान में आते–जाते हैं; वे तेरे में प्रविष्ट नहीं हो जाते, तू तो निर्लेप है। व्रतादि के विकल्प आते हैं, वे तो इस ज्ञायक से भिन्न संयोगी भाव हैं, ज्ञायक की जाति के नहीं हैं; अत: कुजाति हैं, परजाति हैं, परज्ञेय हैं, स्वजाति या स्वज्ञेय नहीं। तू ज्ञायकस्वरूप निर्लेप प्रभु है। इस प्रभुता का अन्दर से विश्वास करने पर पर्याय में प्रभुता प्रगट होती है।

प्रश्न : आत्मवस्तु तो अव्यक्त है, फिर जानने में कैसे आवे ?

उत्तर : वर्तमान में वर्तती पर्याय व्यक्त है – प्रगट है। वह पर्याय कहाँ से आती है ? कोई वस्तु है, उसमें से आती है या कहीं अधर में से आती है ? तरंग पानी में से आती है या फिर कहीं अधर में से आती है ? उसी भाँति पर्याय अधर में से नहीं आती; अपितु वस्तु अव्यक्त–शक्तिरूप है, उसमें से आती है। व्यक्त पर्याय अवयक्त आत्मशक्ति को व्यक्त करती है – उसका अस्तित्व बताती है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 मई से 5 जून	**सूरत**	**प्रशिक्षण शिविर**
7 जून से 7 जुलाई	**विदेश**	**तत्त्वप्रचारार्थ**
7 से 14 जून	शिकागो	
14 से 21 जून	न्यूजर्सी	
21 से 28 जून	डलास	
28 जून से 7 जुलाई	लॉस एन्जिल्स	
2 से 11 अगस्त	**जयपुर**	**महाविद्यालय शिविर**

समाचार दर्शन -

मुमुक्षु समाज में –

ऐतिहासिक दो पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठाएं युगपत् संपन्न

(1) हेरले (महा.) : यहाँ शौरीपुर नगर में सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट-हेरले, सर्वोदय फाउण्डेशन-कोल्हापुर एवं दक्षिण प्रान्तीय मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में श्री 1008 नेमीनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार, दिनांक 16 जनवरी से सोमवार 21 जनवरी, 2019 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा पंचकल्याणक संबंधी प्रासंगिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित नीलेशजी मुम्बई, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, विदुषी धवलश्री पाटील, ब्र.सुजाता रोटे, पण्डित जिनचन्द्रजी शास्त्री, ब्र. श्रेणिकजी, ब्र.मनोजजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री आदि के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में संपन्न हुआ। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में ब्र. श्रेणिकजी, ब्र. मनोजजी जबलपुर, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित आदित्यजी सनावद, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ, श्री संजयजी उपाध्ये, श्री राजेन्द्रजी उपाध्ये, श्री सुभाषजी उपाध्ये, श्री राजूजी उपाध्ये उपस्थित थे।

बालक नेमीकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती मंजुला-जितमलजी जैन मुम्बई को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री सिद्धार्थ-चेतना काला कोलकाता, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री महावीर-सरोजिनी गाठ हुपरी थे। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री अजितजी पिराले बेलगांव ने, सिंहद्वार उद्घाटनकर्त्ता श्री राजेशजी पाटील परिवार हेरले, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्रीमती भावना दिलीप शहा एवं यागमण्डल उद्घाटन डॉ. आमगोंडा पाटील इचलकरंजी ने किया।

दिनांक 18 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री शिवकुमारजी काला कोलकाता को मिला। पालना उद्घाटन राधिका काला कोलकाता ने एवं सर्वप्रथम आहारदान पण्डित नीलेशभाई पूनमचंदजी शहा एवं श्री नाथालालजी वेलीचंदजी शहा परिवार मुम्बई ने किया। मूलनायक भगवान नेमीनाथ के भेंट व विराजमानकर्ता श्री शिवकुमारजी काला परिवार कोलकाता थे। पंचकल्याणक में अत्यंत सुन्दर व आकर्षक 80 प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई। महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 5000 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./

डी.वी.डी. घर-घर पहुंची। महोत्सव में समिति के समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

(2) ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ जी.वाई.एम.सी. परिसर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर एवं तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ के संयुक्त मार्गदर्शन में मुमुक्षु मण्डल ग्रेटर ग्वालियर के तत्त्वावधान में तिघरा में नवनिर्मित श्री दिगम्बर जैन सीमन्धर जिनालय का श्री 1008 पार्श्वनाथ दिग. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 16 जनवरी से 21 जनवरी तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रतिदिन प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालन व निर्देशन में संपन्न हुआ। सहयोगी प्रतिष्ठाचार्य के रूप में पण्डित रमेशजी जैन सनावद, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर उपस्थित थे। कार्यक्रम के सह-निर्देशक पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर थे।

बालक पार्श्वकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती रीता-सुशील जैन ग्वालियर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री धीरेन्द्र-सोनिया जैन कोलकाता एवं कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री अमित-सुरभि जैन ग्वालियर थे।

दिनांक 18 जनवरी को बाल तीर्थंकर का सौधर्मादि इन्द्रों के पश्चात् सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री अंकुशजी पाटनी कोलकाता को मिला। सायंकाल मैनपुरी से आया हुआ 45 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री अनिलजी बोहरा व श्री अंकुशजी पाटनी कोलकाता ने एवं सर्वप्रथम आहारदान श्री वज्रसेन मनोजकुमार जैन ग्वालियर ने किया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। दिनांक 20 जनवरी को ज्ञानकल्याणक के दिन **सूरिमंत्र** विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा ने की। गोष्ठी का संचालन डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने किया। वक्ताओं में पण्डित विरागजी शास्त्री, डॉ. योगेशजी, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी एवं डॉ. संजीवजी गोधा के वक्तव्य हुए।

कार्यक्रम में लगभग 12 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। महोत्सव में सत्साहित्य व सैंकड़ों सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुंची। महोत्सव में समिति के सभी पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।●

साहित्यिक व खेलकूद प्रतियोगिताऐं सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल महाविद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु महाविद्यालय द्वारा दिनाँक 2 से 14 जनवरी तक साहित्यिक प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

उद्घाटन सभा के अवसर पर श्री कालीचरणजी सर्राफ (विधायक), श्री इन्द्रचंदजी कटारिया, श्री सुरेन्द्रकुमारजी बज, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी उखलकर, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रतीक जैन विदिशा ने एवं स्वागत गीत अनुभव जैन खनियांधाना ने प्रस्तुत किया।

बालकों के व्यक्तित्व विकास हेतु निम्न प्रतियोगिताएं हुईं - (1) अनिवार्य भाषण प्रतियोगिता, (2) भजन प्रतियोगिता, (3) अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता, (4) अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, (5) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग), (6) श्लोक पाठ प्रतियोगिता, (7) तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग), (8) काव्यपाठ प्रतियोगिता, (9) संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता, (10) शलाका प्रतियोगिता, (11) नाट्य प्रतियोगिता, (12) शोधपत्र वाचन प्रतियोगिता, (13) निबन्ध प्रतियोगिता, (14) चित्रकला प्रतियोगिता।

इसी क्रम में दिनांक 8 से 17 जनवरी तक खेलकूद प्रतियोगिताएं भी हुई, जिसमें क्रिकेट, बॉलीवॉल, कबड्डी, स्लो साइकिल, तस्तरी फेंक, तीन पैर दौड़, शतरंज, कैरम (एकल), कैरम (युगल), बैडमिंटन (एकल), बैडमिंटन (युगल), दौड़-रिले (4x100), (100 मीटर), (200 मीटर), (400 मीटर), ऊंचीकूद, रस्सीकूद, लम्बीकूद, गोला फेंक आदि का आयोजन हुआ।

सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष द्वारा हुआ। इस प्रकार संपूर्ण कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

(विस्तृत समाचार जैनपथप्रदर्शक के 2 फरवरी वाले अंक में देखें।) •

डॉ. संजीवजी गोधा का तूफानी दौरा

दिनांक 1 से 8 फरवरी तक **सिंगापुर** में अपूर्व धर्मप्रभावना के उपरांत दिनांक 10 व 11 फरवरी को **सोनागिर (म.प्र.)** में तीनों समय दर्शनमोह के कारण बताते हुए अवर्णवाद विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। दिनांक 12 व 13 फरवरी को **ललितपुर (उ.प्र.)** में डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार विधान तथा प्रवचनसार ग्रंथ पर ही तीनों समय प्रवचन एवं शंका-समाधान का कार्यक्रम हुआ। दिनांक 14 व 15 फरवरी को **दौसा (राज.)** में वेदी प्रतिष्ठा के अवसर पर अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

सम्मान समारोह संपन्न

हेरले (महा.) : यहाँ दिनांक 16 से 21 जनवरी तक संपन्न हुए पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

(1) श्री बसन्तभाई दोशी का सम्मान :- अखिल भारतीय सकल मुमुक्षु समाज एवं दक्षिण प्रान्तीय शास्त्री परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में दिगम्बर जैनतीर्थ में अमूल्य योगदान देने वाले श्री बसन्तभाई दोशी का सम्मान समारोह संपन्न हुआ।

सर्वप्रथम श्री बसन्तभाई को प्रवेशद्वार से मंच तक बग्घी पर विराजमान कर गाजे-बाजे के साथ लाया गया। बग्घी के आगे दक्षिण प्रान्तीय स्नातक एवं मुमुक्षुगण चल रहे थे।

ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित रजनीभाई दोशी ने उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला और श्री विजयजी बड़जात्या ने अपने विचार व्यक्त किये। डॉ. शांतिकुमारजी पाटील ने श्री टोडरमल दिग.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के संचालन में आपके विशेष योगदान को स्मरण किया।

समारोह के अन्तर्गत पूर्व सांसद श्री कल्लाप्पाण्णा आवाडे एवं वर्तमान सांसद श्री राजू शेट्टी के करकमलों द्वारा अंगवस्त्र व प्रशस्ति-पत्र भेंटकर सम्मान किया गया। प्रशस्ति-पत्र का वाचन श्री रामकस्तूरे बेलगांव ने किया। कार्यक्रम में सभी विद्वानों के साथ दिल्ली, इन्दौर, कोलकाता, बैंगलोर, मुम्बई, पुणे, नासिक, कारंजा, कोल्हापुर, डासाला, छिन्दवाड़ा, औरंगाबाद, इचलकरंजी आदि मुमुक्षु मण्डलों के प्रमुख मंचासीन थे। सभी ने आपका अभिनन्दन भी किया। कार्यक्रम का संचालन श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा ने किया।

(2) डॉ. शांतिकुमारजी पाटील का सम्मान :- महोत्सव के अन्तर्गत दिनांक 18 जनवरी को विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री ने की। मुख्य अतिथि के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं विशिष्ट अतिथि श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई व श्री शांतिनाथजी पाटील कल्पवृक्ष उपस्थित थे।

गोष्ठी में अनेक शास्त्री विद्वानों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। तत्पश्चात् दक्षिण प्रांतीय शास्त्री परिषद् की ओर से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील का सम्मान समारोह गाजे-बाजे के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने अपने मनोगत व्यक्त करते हुए कहा कि विगत 35 वर्षों से डॉ.शान्तिकुमारजी पाटील पण्डित टोडरमल स्मारक में सेवाएं देते आ रहे हैं। समयसार की टीका आत्मख्याति को संस्कृत पंक्ति से पढाने की इनकी सूक्ष्म व गंभीर शैली प्रशंसनीय है।

उपस्थित स्नातकों द्वारा अपना संक्षिप्त परिचय दिया गया। मंगलाचरण पण्डित श्रेणिक कोरेभावे शास्त्री हेरले एवं आभार प्रदर्शन पण्डित वीतराग वसवाडे शास्त्री द्वारा किया गया। संचालन पण्डित जिनचंदजी शास्त्री ने पण्डित महावीरजी पाटील शास्त्री के निर्देशन में किया।•

विद्वत्संगोष्ठी सानन्द संपन्न

कारंजा-वाशिम (महा.) : यहाँ श्री महावीर ब्रह्मचर्याश्रम (जैन गुरुकुल) के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकपूर्ति महोत्सव समिति के तत्त्वावधान में दिनांक 1 से 3 फरवरी तक एक विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, डॉ. सुजाता ताई रोटे कुम्भोज बाहुबली आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

यह संगोष्ठी पाँच सत्रों में आयोजित की गई। दिनांक 1 फरवरी को प्रात:काल प्रथम सत्र **'अनेकान्त-स्याद्वाद एवं निमित्त-नैमित्तिक संबंध'** विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर उपस्थित थे। गोष्ठी में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित जिनेशजी शेठ मुम्बई व पण्डित शुभमजी जैन द्रोणगिरि ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण पण्डित अनुभवजी शास्त्री पुणे एवं संचालन पण्डित संयमजी शास्त्री भोपाल ने किया। दोपहर में द्वितीय सत्र **'क्रमनियमितपर्याय या क्रमबद्धपर्याय'** विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ उपस्थित थे। गोष्ठी में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित गौरवजी उखलकर कारंजा, पण्डित अमनजी जैन दिल्ली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण पण्डित सुलभजी जैन झांसी एवं संचालन विदुषी प्रज्ञा जैन देवलाली ने किया। दिनांक 2 फरवरी को प्रात:काल तृतीय सत्र **'अधिगम के उपायभूत निश्चय-व्यवहारनय'** विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली उपस्थित थे। गोष्ठी में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित संजयजी राउत औरंगाबाद, पण्डित गुलाबजी बोरालकर एलोरा, पण्डित ज्ञानेन्द्रजी जैन कानपुर, विदुषी प्रज्ञा जैन देवलाली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण पण्डित समकितजी जैन भोपाल एवं संचालन पण्डित शालीनजी जैन मुम्बई ने किया। दोपहर में चतुर्थ सत्र **'द्रव्य-गुण-पर्याय के अन्यथा स्वरूप का निराकरण'** विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर उपस्थित थे। गोष्ठी में पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित संयमजी शास्त्री भोपाल ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन पण्डित

शालीनजी जैन मुम्बई ने किया। दिनांक 3 फरवरी को प्रात:काल पंचम सत्र **'मुक्ति का प्रथम सोपान सम्यग्दर्शन का वास्तविक स्वरूप'** विषय पर आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली ने की। विशेषज्ञ विद्वान के रूप में पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत उपस्थित थे। गोष्ठी में डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित ऋषभजी जैन दिल्ली, डॉ. नेमिनाथजी शास्त्री कुम्भोज बाहुबली, डॉ. स्वर्णलता जैन नागपुर, डॉ. सुजाता ताई रोटे कुम्भोज बाहुबली, विदुषी श्रुति जैन दिल्ली ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। मंगलाचरण विदुषी ईर्याजी जैन दिल्ली एवं संचालन पण्डित अनुभवजी जैन करेली ने किया।●

सिंगापुर में अपूर्व धर्मप्रभावना

सिंगापुर : यहाँ शांतिनाथ जिनालय में दिनांक 1 से 8 फरवरी तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: प्रक्षाल पूजन के पश्चात प्रवचनसार ग्रंथ की संपूर्ण गाथाओं (गाथा 1 से 275) का सरल व संक्षिप्त शैली में मर्म समझाया गया। सायंकाल समयसार ग्रंथ की गाथा 1 से 25, नंदीश्वर द्वीप, कालचक्र, जीवन की दुर्लभता आदि अनेक विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

दिनांक 3 फरवरी को भगवान आदिनाथ निर्वाण दिवस के अवसर पर विशेष रूप से निर्वाण लाडू चढाया गया तथा सामूहिक भक्तामर पाठ के उपरांत संक्षेप में भक्तामर स्तोत्र के मर्म की चर्चा हुई। साथ ही इस दिन 'आर्ट ऑफ लिविंग' विषय पर सरस शैली में व्याख्यान का लाभ मिला। **SJRS** (सिंगापुर जैन रिलीजियस सोसायटी) द्वारा जालान यासीन के हॉल में जैन भूगोल विषय पर सेमिनार का आयोजन भी हुआ।

संपूर्ण आयोजन श्रीमती आरती-अशोकजी पाटनी के कुशल नेतृत्व में श्री सचिन जैन, साकेत जैन, नयन जैन, आशीष जैन एवं विक्रम जैन के सहयोग से संपन्न हुये। **– रितिका पाटनी**

अग्रिम आमंत्रण

दिल्ली : यहाँ श्री सिद्धशिला परिसर, करण गली, विश्वास नगर में फाल्गुन अष्टाह्निका में दिनांक 13 से 22 मार्च तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिविर आयोजित होने जा रहा है। **विद्वत्सान्निध्य –** डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर। **प्रतिष्ठाचार्य –** ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री, पण्डित संजयजी मंगलायतन, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी इन्दौर, पण्डित अनुभवजी जबलपुर, पण्डित विवेकजी दिल्ली। **सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।**

संपर्क सूत्र – वज्रसेन जैन (संयोजक), सुरेन्द्र जैन 'मिन्टू' (अध्यक्ष) 9818260976, मुरारीलाल जैन (उपाध्यक्ष), नीरज जैन (ट्रस्टी व महामंत्री) 9310860590, अतुल जैन (मंत्री) 9625030988

वेदी प्रतिष्ठा संपन्न

दलपतपुर-सागर (म.प्र.) : यहाँ कहान नगर में दिनांक 25 से 27 जनवरी तक वेदी प्रतिष्ठा एवं कलशारोहण कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर आदि विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। कार्यक्रम में सागर, बण्डा, द्रोणगिरि, शाहगढ, अमरमऊ, कर्रापुर, खड़ैरी, बकस्वाहा, मकरोनिया आदि अनेक स्थानों से सैंकड़ों साधर्मियों ने पधारकर लाभ लिया। स्थानीय विद्वानों द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में डॉ.मनोजजी जबलपुर, पण्डित अशोकजी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी टीकमगढ द्वारा संपन्न कराये गये।

अंत में ट्रस्ट के अध्यक्ष महेन्द्रजी चौधरी, मंत्री विनोदजी मोदी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर ने किया। •

86 की उम्र में डॉक्टर ऑफ साइंस

सूरत (गुज.) निवासी **डॉ. धनकुमारजी जैन** ने 86 वर्ष की आयु में दिनांक 2 फरवरी को नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती कृत त्रिलोकसार ग्रंथ के गणित विषय पर **डॉक्टर ऑफ साइंस** की उपाधि (एकेडेमिक क्षेत्र में शोध की अंतिम उपाधि) प्राप्त की। आपने यह उपाधि त्रिलोकसार पर पण्डितप्रवर टोडरमलजी कृत ढूंढारी भाषाटीका पर **'मॉर्डन मैथेमेटिकल एनालिसिस ऑफ त्रिलोकसार'** विषय पर प्राप्त की।

ज्ञातव्य है कि आपने 2014 में 81 वर्ष की आयु में पण्डित टोडरमलजी कृत अर्थसंदृष्टि अधिकार पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की थी, जिसे गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में स्थान प्राप्त हुआ है।

आपकी इस उपलब्धि हेतु वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

-: ध्यान रहे :-

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 53वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर रविवार, दिनांक 19 मई से बुधवार, 5 जून 2019 तक सूरत (गुज.) में आयोजित होने जा रहा है।

एक और स्तम्भ ढह गया

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अनन्य शिष्यों में से एक **विदिशा (म.प्र.) निवासी अध्यात्मरसिक, तत्त्वज्ञान पिपासु, ओजस्वी शैली व वात्सल्य के धनी, प्रखरवक्ता वाणीभूषण पण्डित ज्ञानचंदजी जैन** का दिनांक 28 जनवरी को अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। जीवन के अंतिम समय में अस्वस्थ होते हुए भी उन्होंने तत्त्वज्ञान के गहन चिंतन और अभ्यास को आत्मसात किया। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आपके निर्देशन में सिद्धक्षेत्र सोनागिर में कुन्दकुन्द नगर निर्मित हुआ। आपने श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट को दृढता प्रदान करने में सक्रिय भूमिका निभाई। आपके देहावसान से मुमुक्षु समाज का एक और स्तम्भ ढह गया।

इस प्रसंग पर पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 28 जनवरी को रात्रि में प्रवचनोपरान्त शोक सभा का आयोजन हुआ, जिसमें तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', श्री रमेशचंदजी जैन लवाण एवं श्रीमती कमला भारिल्ल मंचासीन थे।

सभा में डॉ. भारिल्ल ने पण्डित ज्ञानचंदजी के संबंध में अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि उन्होंने स्वयं की रुचि से ही तत्त्वज्ञान को प्राप्त किया और जीवनभर तत्त्वप्रचार के कार्य में संलग्न रहे; तत्त्वप्रचार का कार्य करते हुए भी कभी आत्मकल्याण की भावना का विस्मरण नहीं किया। अन्त में डॉ. भारिल्ल ने शीघ्र की सद्‌गति की प्राप्ति की भावना व्यक्त करते हुए अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

मंचासीन अन्य सभी महानुभावों ने भी पण्डित ज्ञानचंदजी के संबंध में अपने विचार व संस्मरण प्रस्तुत किये। इसके अतिरिक्त पण्डित अभयजी देवलाली द्वारा शोक सन्देश के रूप में भेजी गई कुछ पंक्तियाँ भी प्रस्तुत की गईं।

सभा का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

इसी प्रकार दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) में आयोजित शोक सभा के अन्तर्गत डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, श्री निहालचंदजी जैन 'पीतल फैक्ट्री', श्रीमती प्रभा जैन आदि ने उनके योगदान को स्मरण कर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें -

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

खुशखबरी ! प्रवेश हेतु अवसर!!

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा में स्थित परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

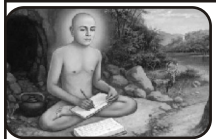
आचार्य समन्तभद्र

द्वितीय सत्र हेतु प्रवेश प्रारम्भ

(सत्रारम्भ - सोमवार, 1 अप्रैल 2019)

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मुमुक्षु आश्रम कोटा स्थित **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** अपना प्रथम सत्र पूर्ण कर चुका है, जिसमें वर्तमान में 6 प्रांतों के 31 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। विद्यानिकेतन का द्वितीय सत्र सोमवार, 1 अप्रैल 2019 से प्रारम्भ हो रहा है, जिसमें कक्षा 8 में 21 छात्रों हेतु प्रवेश फार्म आमंत्रित है।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.ई. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं - तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस उच्च अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति के रूप में वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट-बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 21 छात्रों को प्रवेश।

नोट :- प्रवेश फार्म 1 दिसम्बर से उपलब्ध होंगे, जिन्हें आप www.mumukshuaashram.com से भी डाउनलोड कर सकते हैं। प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

संपर्क सूत्र :- धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य) 9785643203 (w), अभिनय शास्त्री 7737979912, पीयूष शास्त्री 9039290981; E-mail : dharm1008@rediffmail.com

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क
बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

तीर्थधाम ढ़ाईद्वीप संकुल परिचय

संकुल का निर्माण 10 एकड अर्थात् 4 लाख 35 हजार वर्गफिट पर बन रहा है। जिसमें -

01. सिंहद्वार
02. जिन मंदिर (ढ़ाईद्वीप रचना स्वरूप 1143 जिनप्रतिमाएं)
03. पूज्य गुरूदेव श्री का स्टेचू
04. स्वाध्याय भवन
05. पुस्तकालय
06. आडिटोरियम (पूज्य गुरूदेव श्री जीवन परिचय)
07. विद्वत निवास
08. छात्रावास
09. गेस्ट हाउस
10. भोजनशाला
11. कर्मचारी निवास
12. मुमुक्षु मण्डल की सभी संस्थाओं के 27 ऑफिस
13. तीस हजार वर्गफिट का कार्यक्रम स्थल
14. कहान नगर (386 आवास फ्लेट)

श्री कुन्द-कुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इंदौर
गोम्मटगिरी सर्किल, हातोद रोड़, नैनोद, इंदौर (म.प्र.) नं. - 98933.00691

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20*

ढ़ाईद्वीप में विराजमान होने वाली प्रतिमाएं 1138
अन्य प्रतिमा 5 कुल प्रतिमा 1143

- तीस चौबीसी में विराजमान होने वाली कुल प्रतिमा = 720
  (690 प्रतिमा सफेद मार्बल की 18 इंच की और 30 सफेद मार्बल की 33 इंच की प्रतिमा)
- पंचमेरू में विराजमान होने वाली कुल प्रतिमा = 80
  (9 इंच की रत्नों की प्रतिमा)
- गजदंत पर्वतों में विराजमान होने वाली कुल प्रतिमा = 20
  (9 इंच की रत्नों की प्रतिमा)
- मानुशोत्तर पर्वतों पर अकृतिम जिन चैत्यालयों में विराजमान होने वाली कुल प्रतिमा = 04
  (15 इंच स्फटिकमणि की प्रतिमा)
- विदेह क्षेत्र में विराजमान होने वाली प्रतिमाजी = 20
  (33 इंच ग्रेनाईट की प्रतिमा)
- शेष अकृतिम जिन चैत्यालयों में विराजमान होने वाली प्रतिमाजी = 294
  (7 इंच की रत्नों की प्रतिमा)

योग = 1138

इस प्रकार ढाईद्वीप में विराजमान होने वाली 1138 जिन प्रतिमाएं तथा अन्य शेष (5) विराजमान होने वाली जिन प्रतिमाएं।

शेष विराजमान होने वाली प्रतिमाओं का विवरण –

- 111 इंच की खड़गासन प्रतिमा भरत एवं बाहुवली जी = 2
- 33 इंच की पंचधातु की 1 प्रतिमा (स्वाध्याय हाल में विराजमान होने वाली) = 1
- 33 इंच की सफेद धातु की प्रतिमा (स्वाध्याय हाल में विराजमान होने वाली) = 1
- 33 इंच की विश्व की सबसे बड़ी स्फटिकमणि की प्रतिमा = 1

योग = 1143

और आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी की सभी 1143 प्रतिष्ठेय प्रतिमाएं ढ़ाईद्वीप जिनायतन में आ चुकी है।

श्री कुन्द–कुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इंदौर
गोम्मटगिरी सर्किल, हातोद रोड़, नैनोद, इंदौर (म.प्र.) नं. – 98933.00691

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह–सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**